



हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान कोनिफ़र कैम्पस पंथघाटी शिमला - 171013 (हिमाचल प्रदेश)



हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा 22 मई, 2021 को अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा 22 मई, 2021 को अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस मनाया गया। यह दिवस 2002 से हर वर्ष 22 मई को अलग अलग थीम पर मनाया जाता रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य जैव विविधता के बारे में लोगों के बीच जागरूकता फैलाना है ताकि जैव विविधता संरक्षण किया जा सके। इस वर्ष कोविड-19 महामारी के प्रकोप और कोविड कर्फ्यू के कारण आभासीय मंच द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के सभी अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, शोधार्थियों, संस्थान के शोध केन्द्रों में तैनात कर्मचारियों तथा विभिन्न संस्थानों के वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों, विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों, गैर सरकारी संस्थानों के अध्यक्षों सहित लगभग 92 लोगों ने आभासीय मंच "Google Meet" के माध्यम से भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ़ एवं प्रभाग प्रमुख विस्तार ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ॰ एस॰ एस॰ सामंत, आमंत्रित मुख्य अतिथि डा॰ जी॰ एस॰ गोराया, भारतीय वन सेवा (सेवानिवृत्त) पूर्व प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं अध्यक्ष वन विभाग, हिमाचल प्रदेश, सभी वक्ताओं, अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों तथा शोधार्थियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम की रूप रेखा प्रस्तुत की।

डॉ॰ एस॰ एस॰ सामंत, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने प्रतिभागियों को कार्यक्रम से जुड़ने के लिये आभार प्रकट किया। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस कार्यक्रम की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा "अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस, 2021" की थीम "हम समाधान का हिस्सा हैं" (We are part of the solution# for Nature) पर अपने विचार रखे। उन्होंने संस्थान द्वारा जैव विविधता पर किए गए अनुसंधान कार्यों का भी उल्लेख किया। डॉ॰ सामंत ने हिमालयन क्षेत्र की पौध प्रजातियों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला और कहा कि जैव विविधता जीवन और पर्यावरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि हिमालयन क्षेत्र जैव विविधता का भंडार हैं, यहाँ 10502 पौधों की प्रजातियाँ हैं, जिसमें से लगभग 4000 प्रजातियाँ महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि कोरोना जैसी बीमारी का समाधान भी जैव विविधता के घटकों से संभव है, जिसमें विशेष रूप से जड़ी बूटियों व जंगली खाद्य

पदार्थ महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। कचनार, बुरास का जूस अतीश और कडु कि जड़, घृत कुमारी, छरमा का जूस एवं चाय जैसे पौधे इमुनिटी बढ़ाने में महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि विभिन्न मानव जनित गतिविधियों के कारण जैव विविधता का ह्रास तेजी से हो रहा है तथा ये कारक जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा दे रहे हैं। डॉ॰ सामंत ने कहा कि तापमान वृद्धि के कारण सेब की फसल लाहौल स्पिती और किन्नौर के पूह विकास खंड में उगानी शुरू कर दी है तथा पैदावार देनी शुरू हो गई है। इसके अलावा जंगली पेड़ जैसे कि जूनीपर, चिलगोजा, कैल आदि प्रजातियाँ अधिक ऊंचाई की ओर बढ़ने लगी हैं। उन्होंने जैव विविधता के संरक्षण हेतु वन विभाग के साथ साथ स्थानीय लोगों के भागीदारी पर ज़ोर दिया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ॰ जी॰ एस॰ गोराया, भारतीय वन सेवा (सेवानिवृत्त) पूर्व प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं अध्यक्ष वन विभाग, हिमाचल प्रदेश ने 'उत्तर पश्चिमी हिमालय की जैव विविधता' के बारे में बताया और उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने जैव विविधता का स्तर, मूल्य, पारिस्थिकी तंत्र सेवाएँ, जैव विविधता के ह्रास के कारण, जलवायु परिवर्तन का जैव विविधता पर असर, सतत उपयोग एवं संरक्षण विशेषकर हिमालयी क्षेत्रों की जैव विविधता के संरक्षण के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने पारिस्थिकी तंत्र में सूक्ष्म जीवों के महत्व को विस्तार से बताया तथा अतीत व वर्तमान में उत्तर पश्चिमी हिमालय की जैव विविधता की स्थिति के बारे में विस्तार से बताया तथा इसके संरक्षण की नितांत आवश्यकता पर ज़ोर दिया। उन्होंने नदियों में डम्पिंग की समस्या पर भी चिंता जाहिर करते हुए कहा कि नदी तल में डम्पिंग करने से पूरे परिवेश की पारिस्थिकी पर बुरा प्रभाव पड़ता है। डॉ॰ गोराया ने देश के महान पर्यावरणविद स्वर्गीय श्री सुंदर लाल बहुगुणा के योगदान की चर्चा भी की और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

डॉ॰ वनीत जिष्ट, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने 'जैव विविधता और इसके उत्तर पश्चिमी हिमालय के शीत मरुस्थल की पारिस्थिकी पर प्रभाव' के बारे में विस्तार से बताया। शीत मरुस्थल के युनीक और कठिन वातावरण के कारण यहाँ की वनस्पति और जैव विविधता बहुत अलग है। उन्होंने कहा कि शीत मरुस्थल क्षेत्र जड़ी बूटियों का भंडार है। डॉ॰ जिष्ट ने बताया कि अकाष्ठ वन उत्पाद का शीत मरुस्थल के लोगों के जीवन में बहुत महत्व है तथा इस बात पर ज़ोर दिया कि इनका वैज्ञानिक रूप से नियंत्रित दोहन होना चाहिए। ग्लोबल वार्मिंग, अत्यधिक चरान तथा अनियंत्रित पर्यटन, शीत मरुस्थल की जैव विविधता के लिए खतरा बन रहे हैं। इसके अलावा उन्होने जैव विविधता के ह्रास से भविष्य में वातावरण पर होने वाले प्रभावों के विषय पर भी चर्चा की।

कार्यक्रम की अंतिम प्रस्तुति डॉ॰ संदीप शर्मा, वैज्ञानिक-जी एवं समूह समन्वयक अनुसंधान, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने 'गुणवत्ता रोपण स्टॉक उगाने हेतु आधुनिक नर्सरी

तकनीकें' विषय पर दी। उन्होंने आधुनिक पौधशाला तकनीक को विस्तार से बताया। उन्होंने उच्च गुणवत्ता से तैयार नर्सरी पौधों की आवश्यकता पर ज़ोर दिया और कहा कि उच्च गुणवत्ता से तैयार पौधों से पौधरोपण से अधिक सफलता सुनिश्चित की जा सकती है। उन्होंने विभिन्न प्रकार के पोलीहाउस तथा रूट ट्रेनर के महत्व को भी समझाया।

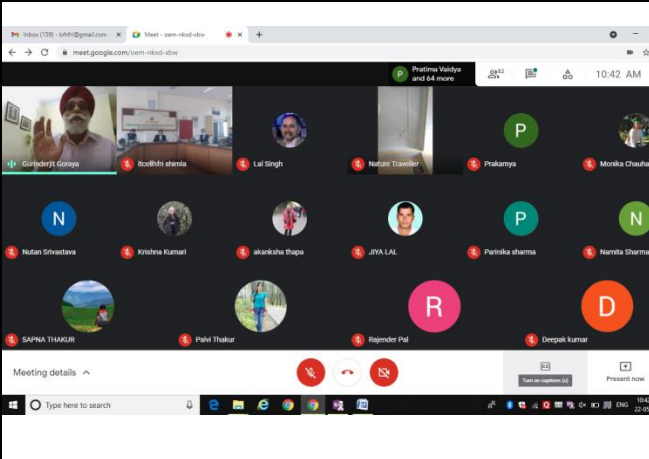
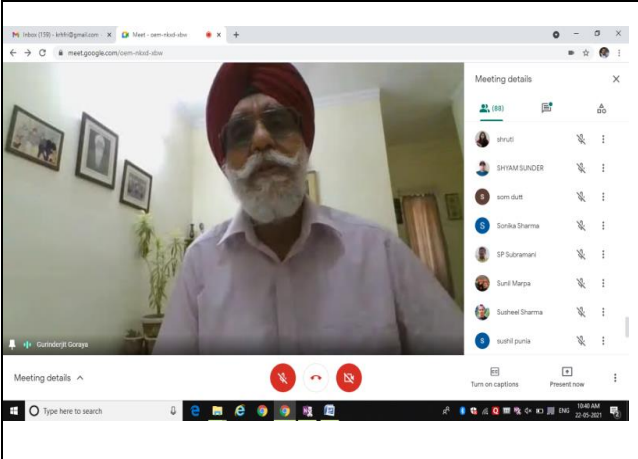
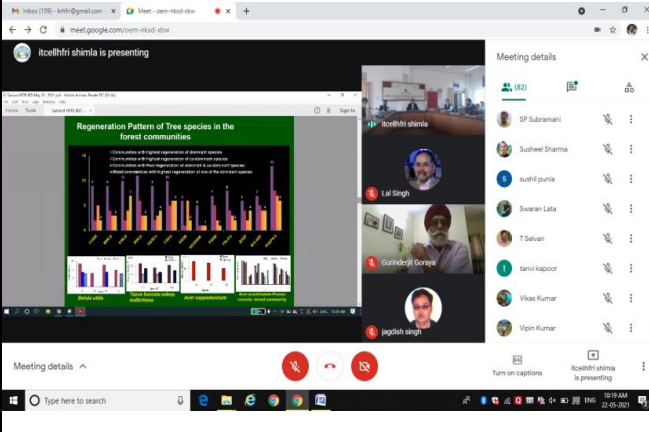
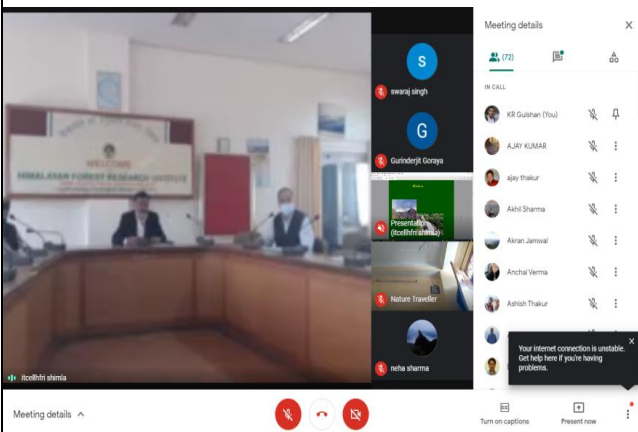
कार्यक्रम के आयोजन में विस्तार प्रभाग के प्रमुख श्री जगदीश सिंह, डॉ॰ जोगिंदर चौहान एवं श्री कुलवंत राय गुलशन ने प्रमुख भूमिका निभाई। डॉ॰ एस॰ एस॰ सामंत, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने आयोजन से जुड़े सभी लोगों के प्रयासों की सरहाना की तथा सभी वक्ताओं के योगदान को संक्षेप में बताते हुये उनका धन्यवाद दिया। कार्यक्रम के अंत में श्री जगदीश सिंह वैज्ञानिक-एफ़ एवं प्रभाग प्रमुख विस्तार ने संस्थान की ओर से सभी वक्ताओं एवं प्रतिभागियों का कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान देने के लिए धन्यवाद दिया।

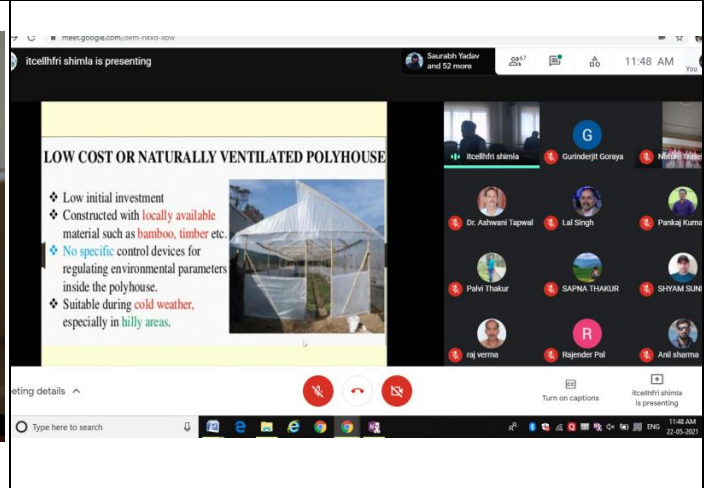
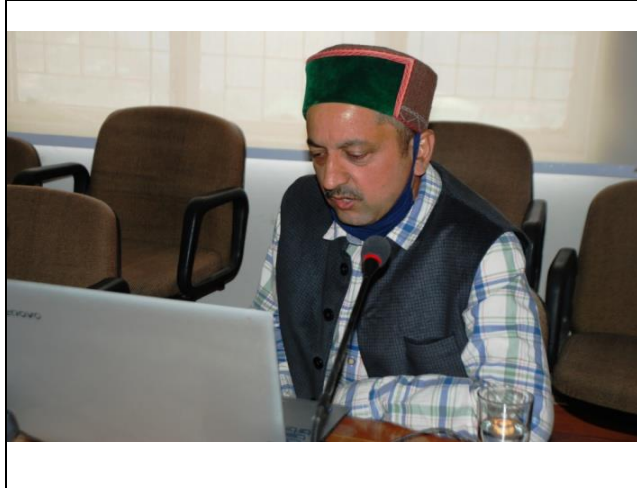
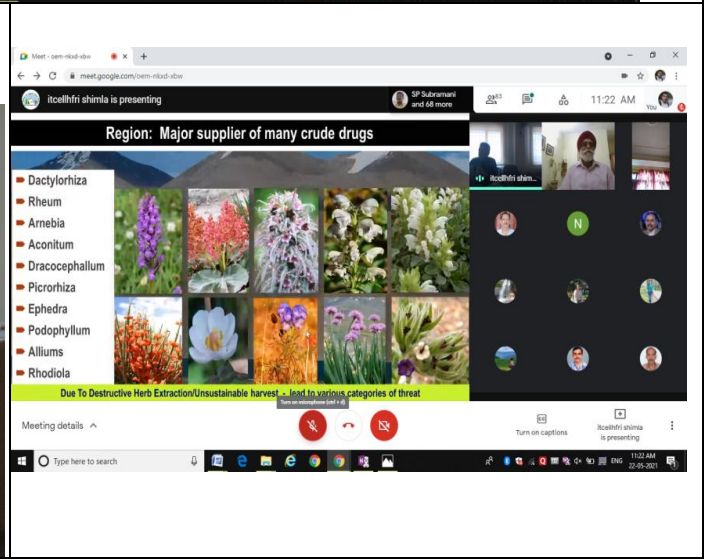
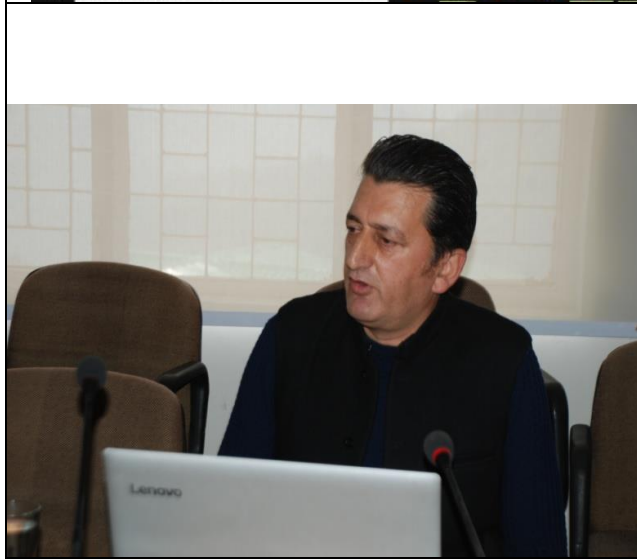
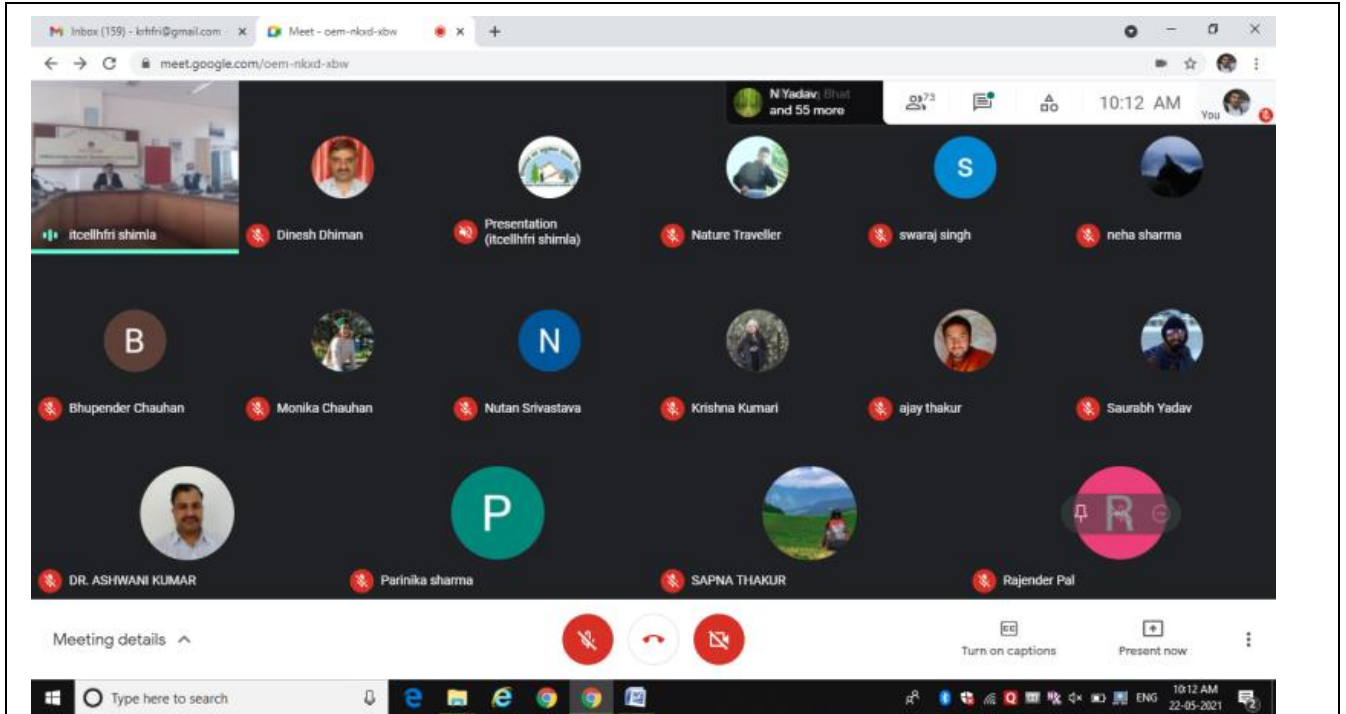
कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ



22 MAY 2021 BIODIVERSITY DAY

We're part of the solution #ForNature







एचएफआरआई में वर्चुअल माध्यम से मनाया गया जैव विविधता दिवस

शिमला | एचएफआरआई शिमला में शनिवार को अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस मनाया गया। यह दिवस 2002 से हर वर्ष 22 मई को अलग अलग थीम पर मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य जैव विविधता के बारे में जागरूकता फैलाना है ताकि इसका संरक्षण किया जा सके। इस वर्ष कोविड-19 महामारी के कारण यह वर्चुअल ढंग से मनाया गया, जिसमें लगभग 92 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए संस्थान के प्रभाग प्रमुख विस्तार जगदीश सिंह ने संस्थान के निदेशक डॉ. एसएस सामंत, मुख्य अतिथि पूर्व प्रधान मुख्य अरण्यपाल डॉ. जीएस गोराया समेत सभी वक्ताओं व प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। निदेशक ने कार्यक्रम की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला और संस्थान द्वारा जैव विविधता पर किए गए कार्यों का उल्लेख किया।

कोरोना का समाधान जैव विविधता घटकों से संभव

divyahimachal May 23rd. 2021

स्टाफ रिपोर्टर — शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डा. एसएस सामंत ने कहा कि कोरोना जैसी बीमारी का समाधान भी जैव विविधता के घटकों से संभव है। विशेष रूप से जड़ी बूटियों व जंगली खाद्य पदार्थ इसमें महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस 2021 की थीम 'हम समाधान का हिस्सा हैं' पर चर्चा की। उन्होंने हिमालयन क्षेत्र की पौध प्रजातियों पर प्रकाश डाला और कहा कि जैव विविधता जीवन और पर्यावरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने शनिवार को अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस मनाया। यह दिवस 2002 से हर वर्ष 22 मई को अलग-अलग थीम पर मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य जैव विविधता पर लोगों को जागरूक करना है, ताकि इसका संरक्षण किया जा सके। इस वर्ष कोविड-19 महामारी के प्रकोप और कोविड कर्फ्यू के कारण आभासीय मंच द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें संस्थान के सभी अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों तथा शोधार्थियों ने आभासीय मंच के माध्यम से यह दिवस मनाया। इस मंच के माध्यम से लगभग 92 लोगों ने भाग लिया।

इस अवसर पर एचएफआरआई के निदेशक डा. एसएस सामंत ने कार्यक्रम की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला। इसके बाद कार्यक्रम की अंतिम प्रस्तुति डा. संदीप शर्मा वैज्ञानिक एवं समूह समन्वयक अनुसंधान ने प्रतिभागियों को 'गुणवत्ता रोपण स्टॉक उगाने हेतु आधुनिक नर्सरी तकनीकें' के विषय में दी। उन्होंने नर्सरी तैयार उच्च गुणवत्ता से तैयार पौधों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने विभिन्न प्रकार के पोलीहाउस तथा रूट ट्रेनर के महत्त्व को भी समझाया। इस अवसर पर वैज्ञानिक जगदीश सिंह ने वक्ताओं एवं प्रतिभागियों का कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान देने के लिए धन्यवाद दिया। पूर्व प्रधान मुख्य अरण्यपाल हिमाचल डा. जीएस गोराया ने जैव विविधता का स्तर, मूल्य, पारिस्थिकी तंत्र सेवाएं, जैवविविधता के ह्रास के कारण, जलवायु परिवर्तन का जैव विविधता पर असर, सतत उपयोग एवं संरक्षण विशेषकर हिमालयी क्षेत्रों की जैवविविधता के संरक्षण के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने महान पर्यावरणविद स्वर्गीय सुंदर लाल बहुगुणा के योगदान की चर्चा की और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

शीत मरुस्थल के विभिन्न पहलुओं पर मंथन: हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के वैज्ञानिक डा. वनीत जिष्ट ने 'जैव विविधता और इसके उत्तर पश्चिमी हिमालय के शीत मरुस्थल की पारिस्थिति पर प्रभाव' के बारे में चर्चा की। उन्होंने वहां की वनस्पति और जीव विविधता के बारे में बताया। उन्होंने शीत मरुस्थल के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि ग्लोबल वार्मिंग, अत्यधिक चरान, अनियंत्रित पर्यटन शीत मरुस्थल की जैव विविधता के लिए खतरा बन रहे हैं। उन्होंने अकाष्ठ वन उत्पाद का लोगों के जीवन में महत्त्व पर भी बात की। साथ ही इस बात पर जोर दिया कि इनका वैज्ञानिक रूप से नियंत्रित दोहन होना चाहिए। इसके अलावा इन्होंने जैव विविधता ह्रास से भविष्य में वातावरण पर होने वाले प्रभावों के विषय पर चर्चा की।